प्रातः क्लास 9/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद हैं ?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जानते हैं हम बेहद के बाप के सामने बैठे हैं। हम ईश्वरीय परिवार के हैं। ईश्वर है निराकार यह भी तुम जानते हो। तुम आत्म–अभिमानी हो बैठते हो। अभी इसमें कोई सायंस घमण्डी, हठयोग आदि करने की बात ही नहीं। यह है बुद्धि का काम। इसमें शरीर का कुछ भी काम नहीं। हठयोग में शरीर का काम रहता है। यहां बच्चे अपन को आत्मा समझ और बाप के सामने बैठे हैं। यह भी जानते हो बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। एक तो कहते हैं अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो हे मीठे–2 बच्चों तुम्हारे सभी पाप कट जावेंगे और चक्र को फिराओ। औरों की सर्विस कर आप समान बनाओ। बाप एक–एक को बैठ देखते हैं। यह क्या सर्विस कर रहे हैं। स्थूल सेवा करते हैं या सूक्ष्म सेवा करते हैं या मूल सेवा करते हैं। एक–एक को बाप देखते हैं। यह सभी को बाप का परिचय देते हैं। मूल बात है यह। हरेक बच्चा बाप का परिचय देते हैं। औरों को कुछ समझाते हैं कि बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। यह सर्विस करते हैं या नहीं? कहां तक इस सर्विस में रहते हैं? अपन को भेंट करते हैं सर्विसएबुल बच्चों से ? सबसे जास्ती सर्विस कौन करते हैं? क्यों नहीं मैं इनसे जास्ती सर्विस करूं। इनसे भी जास्ती याद की यात्रा में दौड़ी पहनूँ। दौड़ी पहन सकता हूँ या नहीं? हरेक को बाबा देखते हैं। बाबा हरेक से समाचार पूछते हैं क्या सेवा करते हो? कोई को बाप का परिचय दे उनका कल्याण करते हो? टाइम वेस्ट तो नहीं करते हो? मूल बात है ही यह। बाप का परिचय देना; क्योंकि इस समय सभी आरफन हैं। बेहद के बाप को कोई भी नहीं जानते। बाप से वरसा तो जरूर मिलता है। स्वर्ग भी था जरूर। शान्तिधाम भी था। जिसको ही मुक्ति कहा जाता है। अभी तुम बच्चों को मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम दोनों ही बुद्धि में है। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं। बच्चों को यह भी समझना है हम अभी पढ़ रहे हैं। फिर स्वर्ग में आकर जीवन मुक्ति का राज–भाग लेंगे। बाकी जो भी ढेर आत्माएं हैं दूसरे धर्म वाले वह तो कोई भी नहीं रहेंगे। सिर्फ़ एक ही रहेंगे। यह भी सिर्फ़ तुम बच्चों की बुद्धि में है। सिर्फ हम ही भारत में रहेंगे। 5000 वर्ष पहले भी हम ही थे। बाप बच्चों को बैठ सिखलाते हैं ना। बुद्धि में क्या याद रहना चाहिए। यहां तुम संगमयुग पर बैठे हो। तो खान–पान भी शुद्ध, पवित्रता भी जरूर चाहिए। जानते हो हम भविष्य में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनने हैं। यह महिमा शरीरधारी देवताओं की है। आत्माओं की तो महिमा नहीं है। वहां तो सिर्फ़ आत्माएं निवास करती हैं। हरेक का अपना–2 पार्ट है। जो यहां आकर बजाते रहते हैं। तुम्हारी बुद्धि में एम आबजेक्ट तो है। हमको इन जैसा बनना है। बाप का फरमान है हे! बच्चों, पवित्र बनो। पूछेंगे कैसे पवित्र रहें? क्योंकि माया के तूफान बहुत आते हैं। बुद्धि कहां–2 चली जाती है। उनको कैसे छोड़ें। बच्चों की बुद्धि चलती है ना। और कोई की भी बुद्धि नहीं चलती है। बाप, टीचर, गुरु भी तुमको मिला है। यह भी तुम जानते हो ऊँच ते ऊँच है भगवान। वह बाप भी है, टीचर भी है। ज्ञान का सागर भी है। बाप आये हैं, हम सभी आत्माओं को साथ ले जावेंगे। सतयुग में तो बहुत ही थोड़े रहते हैं। सिर्फ़ भारत में थोड़ी जीवात्माएं रहती हैं। वह हैं देवी देवताएं। यह बातें सिवाय तुम्हारे और कोई की भी बुद्धि में नहीं होगा। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हम थोड़े ही समय में, 8 वर्ष में, सिर्फ़ हम ही थोड़े बाकी रहेंगे। और इतने सभी धर्म, खण्ड आदि नहीं रहेंगे। हम ही विश्व के मालिक होंगे। बाबा आया है आदि–सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। हम ही सारे विश्व पर रहेंगे। हमारा ही एक राज्य होगा। बहुत ही सुख का राज्य होगा। यह भी जानते हो उस समय किस–2 पद वाले होंगे। हमारा क्या पद होगा। हम कितनी रूहानी सेवा करते हैं। बाप भी पूछते हैं। ऐसे नहीं कि बाबा अन्तर्यामी है। बच्चे हरेक खुद समझ सकते हैं हम क्या कर रहे हैं। कौन सी सेवा कर रहे हैं। जरूर समझते होंगे पहले न० में सेवा तो यह दादा ही करते हैं श्रीमत पर। यह तो बहुत सेवा कर रहे हैं। घड़ी–2 समझाते रहते हैं मीठे–2 बच्चों अपन को आत्मा समझो। देह–अभिमान छोड़ो। अपन को आत्मा कितना समय समझते हो। यह पक्का

करना है हम आत्मा हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इससे ही बेरा(ड़ा) पार होना है। याद करते–2 पुरानी दुनियां से नई दुनियां में चले जावेंगे। अभी बाकी थोड़ा समय है। फिर हम अपने सुखधाम चले जावेंगे। जो अच्छी रीत सेवा करते हैं, क्योंकि मुख्य है रूहानी सेवा। सभी को परिचय देना। यह है सबसे सहज बात। स्थूल सर्विस करने में, भोजन आदि बनाने में, भोजन खाने में भी मेहनत लगती है। इसमें तो मेहनत की कोई बात ही नहीं। सिर्फ अपन को आत्मा समझना है। आत्मा अविनाशी, शरीर विनाशी है। आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। एक शिक्षा बाप एक ही बार आकर देते हैं। जब विनाश का समय होता है। नई दुनियां है ही देवी–देवताओं की। उसमें जरूर जाना है। बाकी सारी दुनियां को शान्तिधाम जाना है। यह पुरानी दुनियां रहेगी नहीं। तुम नई दुनियां में होंगे तो पुरानी दुनियां की याद होगी ? कुछ भी नहीं। तुम स्वर्ग में ही होंगे। राज्य करते होंगे। यह बुद्धि में रहने से भी खुशी होती है। नई दुनियां को स्वर्ग भी कहा जाता है। अनेक नाम दिये जाते हैं। नर्क को भी अनेक नाम दिये जाते हैं। पापात्माओं की दुनियां, हेल, दुःखधाम। अभी तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप एक ही है, हम उनके सिकीलधे बच्चे हैं। तो ऐसे बाप से लव भी बहुत होना चाहिए। बाप का भी बहुत लव है बच्चों में। जो बहुत सेवा करते हैं, काँटों को फूल बना देते हैं। हमको बनाने आये हैं। बाप खुद नहीं बनते। मनुष्य से देवता बनना है ना। तो अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए स्वर्ग में हम कौन सा पद पावेंगे। हम क्या सेवा करते हैं। घर में नौकर–चाकर है उनको भी पहचान देनी चाहिए। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। जो जो कनेक्शन में आते हैं उनको शिक्षा देनी चाहिए। सभी की सेवा करनी है ना। अबलाओं, गरीबों की, भीलनियों की, गरीब तो बहुत हैं ना। वह सुधर जावेंगे। कोई भी पाप आदि न करेंगे। नहीं तो पाप–कर्म करते रहेंगे। देखते हो चोराकारी भी कितनी होती है। नौकर लोग भी चोरी कर लेते हैं। नहीं तो घर में बच्चे हैं ताला क्यों लगावें। परन्तु आजकल बच्चे भी चोर बन पड़ते हैं। कुछ न कुछ छिपाकर उठा लेते हैं। किसको भूख सताती है तो हवच्छ(हवस) कर खा लेते हैं। लोभ वाला जरूर कुछ चोरी कर खाता होगा। यह (तो) शिवबाबा का भण्डारा है। इससे तो पाई की भी चोरी नहीं करनी चाहिए। यह ब्रह्मा तो ट्रस्टी है। बेहद का बाप भगवान तुम्हारे पास आया है। भगवान के घर में कब कोई चोरी करता होगा। स्वप्न में भी नहीं होगा। तुम जानते हो ऊँच ते ऊँच है शिव भगवान, उनके हम बच्चे हैं। तो हमको दैवी–कर्म करनी चाहिए। तुम चोरी करने वाले को भी जेल में जाकर ज्ञान देते हो। यहां क्या चोरी करेंगे। कब आम उठाया, कोई चीज़ उठाकर खा ली। यह भी चोरी है ना। यज्ञ है ना। कोई भी चीज़ बिगर पूछे उठानी न चाहिए। हाथ भी न लगाना चाहिए। शिवबाबा हमारा बाप है, वह सुनते हैं, देखते हैं, पूछते हैं बच्चे कोई अवगुण तो नहीं है। अगर कोई अवगुण हो तो सुना दो। दान में दे दो। दान में देकर फिर कोई अवज्ञा करेंगे तो फिर बहुत सजाएं खावेंगे। चोरी की आदत होती है। समझो कोई साइकिल उठाते हैं तो पकड़ा जाता है। कोई दुकान में गया बिस्केट का डब्बा उठा लिया या कोई छोटी–2 चीज़ ऐसे ही छिपाकर ले लेते हैं। दुकान वाले बड़ी सम्भाल रखते हैं। यह तो बहुत बड़ी गवर्मेन्ट है। बड़ी ते बड़ी पाण्डव गवर्मेन्ट है। अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तो राज्य नहीं करता। तुम पाण्डव ही राज्य करते हो। उन्होंने पाण्डव पति कृष्ण को कह दिया है। पाण्डवपति वा पिता कौन है, कौन है, तुम जानते हो। सामने बैठे हैं। हरेक अन्दर में समझ सकते हैं हम बाबा की क्या सेवा करते हैं। बाबा हमको विश्व की बादशाही दे खुद वानप्रस्थ में चले जाते हैं। कितनी निष्काम सेवा करते हैं। बाप जैसे निष्काम सेवा कोई कर न सके। कितनी ऊँच ते ऊँच सेवा करते हैं। सभी सुखी और शान्त हो जाते हैं। वह तो सिर्फ़ कहते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। शान्ति की प्राइज देने अखबारों में डालते हैं। यहां तो तुम बच्चे जानते हो तुमको तो बहुत भारी प्राइज मिलती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं। ऊँच ते ऊँच सेवा है बाप का परिचय देना। यह तो कोई भी कर सकते हैं। बच्चों को यह बनना है। तो सेवा भी करनी चाहिए ना। इनका देखा यह

भी लौकिक परिवार था ना। इनसे बाबा ने कराया। इसमें प्रवेश कर इनको भी कराते हैं। कहेंगे तुमको ही कि यह करो। हमको कैसे कहेंगे। हमारे में प्रवेश होकर करते हैं। करन–करावनहार है ना। बैठे–2 कहा चलो। यह छोड़ो। यह तो छी–छी दुनियां है। चलो वैकुण्ठ। अभी स्वर्ग का मालिक बनना है। बस वैराग्य आ गया। सभी समझते थे इनको क्या होता है। इतना जबरदस्त फायदे वाला व्यापार, यह क्या करते हैं। पता थोड़े ही था कि यह क्या जाकर करेंगे। छोड़ना कोई बड़ी बात थोड़े ही है। बस त्याग। सो भी बाप यहां ही बैठ बच्चों की सेवा करते थे। सभी को त्याग कराया। बच्ची को भी त्याग कराया। अभी यह रूहानी सेवा करनी है। सभी को पवित्र बनाना है। सभी कहते थे यह ज्ञानामृत पीने जाते हैं। नाम माता का लेते थे। ओमराधे पास ज्ञानामृत पीने जाते हैं। किसने यह युक्ति रची। शिवबाबा ने इनमें प्रवेश हो कितनी अच्छी युक्ति रची। जो कोई आवेगा ज्ञानामृत पी(वे)गा। यह भी गायन है अमृत छोड़ विख काहे को खाये। विख छोड़, ज्ञान अमृत पी पावन देवता बनना है। पावन कब विख नहीं खावेंगे। शुरू में यह बात थी। कोई भी आवेंगे उनको कहेंगे पावन बनो। अमृत पीना है तो विख छोड़ देना है। पावन वैकुण्ठ का मालिक बनना है। एक को ही याद करना है। ज्ञान–अमृत पीना है तो विख नहीं पीना है। तो जरूर झगड़ा चलेगा ना। शुरू की खिट–पिट अभी तक चली आती है। अबलाओं पर कितनी मार–पीट होती है। यह तो चलती रहेगी; क्योंकि काम बड़ा शत्रु है। कामेषु क्रोधेषु है ना। काम की चेष्टा पूरी न हुई तो मारेंगे। जितना तुम बहुत होते जावेंगे फिर समझेंगे पवित्रता तो अच्छी है। इसके लिए ही हम पुकारते हैं आकर बाबा हमको पावन बनाओ। तुम्हारी भी पहले कैरेक्टर क्या थी। क्या–2 करते थे। अभी तुम क्या बन रहे हो। आगे तो देवताओं के आगे जाकर कहते थे हम पापी हैं, ऐसे हैं। अभी ऐसे नहीं कहेंगे; क्योंकि अभी तुम जानते हो हम यह बनते हैं। अपन से पूछना चाहिए कहां तक हम सेवा करते हैं। जैसे भण्डारी है। तुम्हारे लिए कितनी सेवा करती है। कितना उनका पुण्य बनता है। बहुतों की सेवा करती है। तो (स)भी के आशीर्वाद उस पर आती है। बहुत महिमा लिखते हैं, भण्डारी की तो कमाल है। कितना प्रबन्ध रखती है। यह तो हुई स्थूल सर्विस। सूक्ष्म भी करना चाहे तो कर सकते हैं। सिर्फ़ शिवबाबा को याद कर भोजन बनावे। एक शिवबाबा के सिवाय और कोई है नहीं। वही सहायता करते हैं। गायन भी है ना शरण परी(ड़ी) प्रभु मैं तेरी। सतयुग में थोड़े ही ऐसे कहेंगे। अभी तुम शरण में आये हो। बाप समझाते हैं आधा कल्प तुम रावण से पीड़ित हुये हो। अभी बाप छुड़ाते हैं। तो बाप के शरण आये हो। कहते हो बाबा यह 5 भूत बड़े ही तीखे हैं। कोई को भूत लगता है ना। अशुद्ध सोल आती है। तुम्हारे को कितनी भूत लगी हुई है। काम, क्रोध ..... यह भूत तुमको बहुत पीड़ित करते हैं। वह अशुद्ध सोल तो कोई को तंग करती है। तुमको पता है यह 5 भूत तो 2500 वर्ष से चले आये हैं। तुम कितने तंग हो पड़े हो। इन 5 भूतों ने कंगाल, वर्थ नॉट अ पैनी बना दिया है। देहअभिमान का भूत है नम्बर वन। काम भी बड़ा भूत है। उन्होंने तुमको कितना सताया है। यह भी बाप ने बतलाया है कल्प–2 तुमको यह भूत लगनी है। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। सभी को भूत लगा हुआ है। तो यह भूत की दुनियां कहेंगे ना। यह भी तुम समझते हो और कोई समझ न सके। रावण राज्य माना आसुरी राज्य। सतयुग–त्रेता में भूत नहीं होते हैं। एक भूत भी कितना दुःखी कर देते हैं। इनका किसको पता नहीं है। 5 विकारों रूपी रावण का भूत है। जिससे बाप आकर छुड़ाते हैं। तुम्हारे में भी कोई–2 सेन्सीबुल हैं। जिनकी बुद्धि में बैठता है। इस जन्म में तो ऐसा कोई काम न करना है। चोरी की, देहअभिमान आया। नतीजा क्या होगा पद भ्रष्ट हो जावेंगे। ऐसे–2 भी यज्ञ में रहते हैं कुछ न कुछ उठाये लेते। कहते भी हैं कख का चोर सो लख का चोर। यज्ञ में तो ऐसा काम कब नहीं करना चाहिए। आदत पड़ती है फिर तो कब छूटती नहीं। कितना माथा मारते हैं। विकार के लिए भी कितना तंग करते हैं। उनका नाम ही है सूपनखा, पूतना, दुःशासन, अकासुर–बकासुर। यह सभी आसुरी नाम हैं। बच्चे जानते हैं हम भी आसुरी सम्प्र० थे। अभी ईश्वरीय सम्प्र० बने हैं। बाप हमको कितनी अच्छी

मत देते हैं। मीठे–2 बच्चे मुझे याद करो तो किचड़ा निकल जावेंगे। मैं बेहद का सोनार हूँ। तुमको बहुत अच्छी युक्ति बताता हूँ। जंक जो तुम्हारे ऊपर चढ़ी हुई है वह कैसे उतरे। पक्के सोने पर 5 विकारों रूपी जंक चढ़ी हुई है। सोनार जब जेवर बनाते हैं तो उसमें थोड़ा शुद्ध चान्दी डालते हैं फिर तामा, लोहा इन सभी का अन्दाज होता है। 24 कैरेट प्योर सोना को कहा जाता है। सच्चा सोना कब काला नहीं होता। 9 कैरेट होगा तो काला हो जावेगा। तुम भी काले तमोप्रधान हो गये हो। कुछ डाला तो नहीं है। नीचे गिरते ही आये हो। बाप समझाते हैं तुम्हारे में यह जंक पड़ी है। इसलिए आत्मा तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान बनना है तो बाप को याद करते रहो। जितना याद करेंगे उतना ही सतोप्रधान बनते जावेंगे। मनुष्य से देवता बनना है ना। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। सेमी स्वर्ग। दो कला कम हो जाती है राम राज्य में। वह सूर्यवंशी वह चन्द्रवंशी। मनुष्य भल राम–2 करते, माला जपते हैं रहते; परन्तु फायदा कुछ भी नहीं। राम कोई पतित–पावन थोड़े ही है। हां, शिवबाबा पतित–पावन है। उनको ही याद करना है। शिवबाबा है ही सभी आत्माओं का बाप। तुमको बाप ने कितनी समझ दी है। पढ़ाते हैं, समझाते हैं कोई भी छी–छी काम न करना है। तुम फूल बनते हो ना कांटे से। जानते हो बाबा आया हुआ है फूल बनाने। गार्डेन ऑफ फ्लावर्स। तुम बच्चे जानते हो हम फूल बन रहे हैं। तुम बच्चे यहां बैठे हो, हरेक समझ सकते हैं हम क्या सेवा करते हैं। हमारे में कौन सा अवगुण है। बगीचे में जाकर देखो। वहां अक सहित सभी फूलों की वैराइटी हैं। फर्क देखो कितना है फूलों में। यहां है दुःखों की वैराइटी। वहां है सुख की वैराइटी। पद में फर्क तो होता है ना। बाप कहते हैं बच्चे पुरुषार्थ करो नर से ना० बनने का। अवगुण निकालते जाओ। हर बात में राय लेते रहो। बाबा हमको चोरी करनी पड़ती है। यह करना पड़ता है। खाना पड़ता है। अच्छा हर्जा नहीं। शिवबाबा को याद करते रहो। जितना याद करेंगे तो कट उतरेगी। बाकी विकार में तो कब नहीं जाना। पावन जरूर बनना है। विकार से तो तोबा भरनी चाहिए। तुमने पुकारा ही है बाबा हमको पतित से पावन बनाओ। तो अभी पावन बनने लिए याद करो ना। याद न करने से फिर खराब काम होती है। उनके लिए तोबा भरो। कोई भी बुरा काम न करो। कख का चोर सो लख का चोर। पाई की चीज़ उठाई, चोर तो हुआ ना। सभी को समझाते रहना है। बाप का परिचय देना है। बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। नहीं तो सौणा दन्ड पड़ जावेगा। आदत पड़ती है तो वह बताना चाहिए। बताने बिगर कब छूट न सके। करते रहते हैं। सुनाते नहीं तो वह वृद्धि को पा लेती है। विकार में रोज जाते हैं, बतलाते नहीं। दिन–रात विकार में जाते रहते हैं। उनकी क्या गति होगी। बाप तो समझाते हैं तुमको विकार के लिए तंग करते हैं, बोलो भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम काम पर जीत पहनो तो जगतजीत बनेंगे। अभी की बात है। हम विश्व की बादशाही लेंगे। विकार में कभी नहीं जावेंगे। अबलाओं पर अत्याचार भी ड्रामा में नूँध है। कोई नई बात नहीं। गीता का ही ज्ञान है। हर 5000 वर्ष बाद सुनाते हैं। भगवान कब आया, वह कौन है यह भी किसको पता नहीं। यह भी बाप ने समझाया है विनाश कैसे होगा। मनुष्यों की सेना की, एरोप्लेन आदि की कोई की दरकार नहीं। ऐसी चीज़ बनाई है तो जहां बैठे होंगे वहां ही ढेर हो जावेंगे। मौत सिर पर खड़ा है। बाप समझाते हैं अभी घर को याद करो तो पाप कटे। एक ही मूल बात है। इसमें सभी आ जाते हैं। याद से ही तुम 24 कैरेट प्योर बनेंगे। फिर स्वर्ग में आ जावेंगे। भक्ति मार्ग में भी तुम गाते आये हो बाबा आप आवेंगे तो हम आपके ही होकर रहेंगे। आप से ही वरसा लेंगे। तो ऐसा करना चाहिए ना। अपनी जांच रखो हम बाबा को मदद करते हैं। जास्ती कहने की भी दरकार नहीं। हम एक बार समझाते हैं, दूसरा बार समझावेंगे फिर तीसरा बार किया तो थप्पर(ड़)..... बाप भी कहते हैं खबरदार रहना। अपनी जांच रखनी है। इस अनुसार हमको कितनी प्राइज मिलेंगी। है तो बहुत सहज। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसको अजपा–जाप कहा जाता। अन्दर में जप नहीं। हम सभी का वह बाप है। हम पढ़ रहे हैं आवाज की बात नहीं। अन्दर में समझने की बात है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।